

संस्त्याय (von स्त्या mit सम्) m. 1) *Anhäufung, Ansammlung* AK. 3, 4, 24, 153. H. an. 3, 512. MED. j. 109. Nir. 10, 9, 12, 9. — 2) *Haus, Wohnung* H. 991. H. an. HALĀJ. 2, 136. संस्त्यायमेव गच्छावः MĀLATĪ. 23, 11. = संनिवेश AK. H. an. MED. = संस्थान MED.

संस्थ (von स्था mit सम्) 1) adj. (f. स्था) = *अवस्थित* MED. th. 13. a) *stehend —, weilend —, sich befindend in, auf, enthalten in:* सीतया पार्श्वे संस्थया R. GORR. 2, 13, 8. वने ऽत्र Spr. (II) 263. दिने दिने तर्षां चित्तं त्वपि संस्थं भवतु HARIV. 14673. gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: तन्निशिला^० MBH. 1, 834. काञ्चनपट्टि^० 3, 698. पातालतल^० 15757. 7, 3800 (कर्षो कृत्तसंस्थया mit der ed. Bomb. zu lesen). द्रौपदीतल्प^० 8, 3505. R. 4, 43, 9. अग्नि^० 5, 33, 37. 54, 14. 6, 14, 22. स्वोच्चसंस्थेषु प्रक्षेपु R. ed. Bomb. 1, 18, 9. RAGH. 6, 29. KUMĀRAS. 6, 60. MĀLAV. 13. VARĀH. BRH. S. 5, 85. 11, 40. 17, 2. 28, 3. 40, 3. 45, 10. 50, 12. 52, 10. 54, 1. Spr. (II) 1307. 2094. 2249. 2953. 3138. 4529. 6183. 6398. KATHĀS. 14, 19. 25, 113. 80, 53. MĀRK. P. 18, 50. 51, 16. 75, 8. BHĀG. P. 11, 12, 21. Verz. d. Oxf. H. 16, a, 6. 156, a, 2. VET. in LA. (III) 4, 14. ऋक्संस्थं साम ÇĀKH. zu KHĀND. UP. S. 44. अन्नार्थीमी जीवसंस्थः SARVADARÇANAS. 53, 12. तस्याश्चरुमथाज्ञानादात्मसंस्थं चकार ह् so v. a. *nahm zu sich, verzehrte* HARIV. 1439. — b) *befindlich in, bei* so v. a. *eigen, gehörig:* जवेनात्मनि संस्थेन R. 7, 36, 27. गोषु ब्राह्मणसंस्थासु M. 8, 325. चतुर्थं तस्य धर्मस्य तत्संस्थं वै भविष्यति MBH. 12, 2522. कामान्सर्वान्पार्थिवानेकसंस्थान् 13, 3685. विद्यया चात्मसंस्थया (par sa science fixée sur l'Esprit BUANOUF) BHĀG. P. 3, 10, 6. — c) *beruhend auf, abhängig von; am Ende eines comp.:* अर्थवर्गः सङ्गामात्प्यो मत्संस्थो ऽद्य MBH. 1, 5684. अमात्यसंस्थः सर्वेषु कार्येषु भवतदा 7477. (ताम्) आत्मसंस्थो चकार 3, 17125. अस्मत्संस्थो च पृथिवी वर्तते 5, 2167. देव^० 13, 1005. पुत्रसंस्थं विपुलं राज्यं विप्रोषिते त्वपि 13, 162. शान्तिं मत्संस्थाम् BHĀG. 6, 15. आत्मसंस्थं मनः कृत्वा 25. — d) *sich befindend in* so v. a. *theilhaftig, im Besitz von — seiend:* सख^० MBH. 5, 1690. फालसंस्था भविष्यामि कृत्वा कर्म सुदुष्कारम् 1, 6193. सुख^० glücklich lebend PANĀT. 94, 2. — e) *bestehend, dauernd:* कतिपयदिनसंस्थं (was GILDEMEISTER aus metrischen Rücksichten in दिनेः कतिपयैः संस्थं verändert hat) यौवनम् VET. in LA. (III) 35, 22. — f) *tot* (vgl. संस्थित) ÇĀNDAR. im ÇKDR. — 2) m. Späher, Kundschafter MED.; vgl. 4) h). — 3) loc. etwa *in loco; inmitten, in Gegenwart* RV. 1, 3, 4. संस्थे यदग्रे ईयसे रयीणाम् 5, 3, 8. संस्थे जनस्य गोमतेः 8, 21, 11. उपस्तुतीनाम् 27, 15. *auf der Stelle* 32, 11. — 4) f. संस्थो a) *das Bleiben, Verbleiben bei Jmd:* (अभ्यागतस्य) सुखं पृष्ट्वा प्रतिवेद्यात्मसंस्थां (so v. a. *auffordernd bei ihm zu bleiben*) ततो दद्यादन्नमवेद्य धीरः MBH. 5, 1399. आत्मसंस्थाकर 13, 1272. — b) *Gestalt, Form, Aussehen* ŚĪH. D. 624. am Ende eines adj. comp. *in der Form von — auftretend, erscheinend als:* एतस्त्रियं नित्यमेवात्मसंस्थम् ÇVETĀÇV. UP. 1, 12. ईश^० 6, 17. इमाश्चतस्रो दिशश्चतस्र उपदिशो दलसंस्थाः MAITRĀJUP. 6, 2. मृदत्संस्थमपस्पाडम् 27. धनुःसंस्थे द्वे वर्षे दन्तिपोत्तरे MBH. 6, 233. अभाव^० (निर्य) 5, 729. Kir. 15, 12. वक्र^० = वक्र HALĀJ. 2, 148 (vgl. AK. 2, 2, 14. H. 1009). संस्था = सादृश्य H. an. 2, 221. MED. = साकारं VAIĀ. bei MALLIN. zu Kir. 15, 12. — c) *eine festgesetzte Ordnung, Norm:* लोकस्य संस्था न भवेत्सर्वं च व्याकुलीभवेत् MBH. 12, 1992. पाचत्ते ऽहूर्निशासंस्थो यथावदविखण्डिताम् MĀRK. P. 16, 70. सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्पृथक् । वेदशब्देभ्य एवादि

पृथक्संस्थाश्च निर्ममे ॥ M. 1, 21. उपयोग^० (= ऽनियम) KARAKA 3, 1. संस्थां कार् oder स्थापय् *eine Verhaltensregel (für sich) aufstellen, eine Verpflichtung eingehen:* संस्थो व्यतिक्रन् oder परिभिद्व (v. l. प्रतिभिद्व) *einer aufgestellten Verhaltensregel —, seiner Verpflichtung untreu werden* MBH. 13, 7543. R. GORR. 1, 62, 26. 4, 35, 29. 57, 23. 5, 32, 23. कृतं festgesetzt, bestimmt HARIV. 11113. संस्था = मर्षादा, स्थिति AK. 2, 8, 4, 26. TRIK. 3, 3, 200. fg. H. 744. H. an. MED. VAIĀ. a. a. O. = व्यवस्था H. an. HALĀJ. 5, 33. VAIĀ. a. a. O. — d) *Beschaffenheit, Natur, Wesen:* इक्षित्प्रुत्क^० RAGH. 11, 38. BuĀG. P. 2, 1 und 2 in der Unterschr. 3, 7, 26. 10, 9. 20, 17. 23, 43. 4, 7, 39. 5, 10, 14. 20, 38. 26, 40. 6, 4, 26. 10, 37. 23. 70, 5. 11, 10, 15. 12, 11, 9. संस्था = व्यक्ति H. an. — e) *Abschluss, Vollendung* TRIK. H. an. VS. 19, 29. नेत्पुरा पञ्चस्य संस्थाया अन्नं गच्छानि ÇAT. BR. 3, 1, 2, 6. 2, 1, 7. 1, 1, 1, 3. 9, 1, 4. 7, 2, 2, 7. 8, 1, 2, 3. 9, 4, 4, 15. 13, 4, 4, 3. NIDĀNAS. bei WEBER, Nax. 2, 284. AIT. BR. 2, 28. 6, 3. अङ्कः 7, 17. TS. 1, 6, 24, 2. KĀTJ. ÇA. 1, 7, 17. पर्व^० 5, 2, 13. 25, 5, 16. 7, 1. अङ्कः^० TBH. 3, 12, 2, 6. LĀTJ. 10, 5, 13. इष्टि^० 13, 8. ऽन्वयः Schlussgebet ĀÇV. ÇA. 1, 12, 14. fg. 13, 10. प्राक्संस्थ in der Richtung nach Osten endigend KĀTJ. ÇA. 2, 1, 16. उदक्संस्थ ऄÇV. GRH. 1, 3, 1. 10, 17. — f) *Ende* so v. a. *Untergang, Tod* TRIK. H. 323. H. an. MED. HALĀJ. 3, 6. VAIĀ. a. a. O. क्षेमकं प्राप्य राजानं स (वंशः) संस्थो प्राप्स्यते कलौ VP. 4, 21, 4. BHĀG. P. 1, 12, 16. 13, 32. 9, 12, 15. 22, 43. पाण्डुयुत्रापाम् 1, 7, 12. 2, 4, 4. 6, 10, 3. 7, 7, 10. *Untergang der Welt* 12, 7, 9. 17. पत्संस्थमिदम् 2, 8, 2. — g) *ein abgeschlossener liturgischer Satz oder Gang im Soma-Cult.* In mehreren solcher Sätze bewegen sich die Hauptbegehungen; der Gĳotishṭoma z. B. kann bestehen in den sieben Sätzen: Agni-ṣṭoma, Atjagnishṭoma, Ukthja, Shoḍaḥin, Vāgapeja, Atirātra und Aporjāma. ŚĪT. in der Einl. zu AIT. BR. und zu 3, 49. 4, 12. Ueber die Differenzen vgl. Ind. St. 9, 120. 229. 10, 325. 352. तृतीयसवन उत्तरोत्तरा संस्थामुपपुरातिरात्रात् ऄÇV. ÇA. 6, 7, 7. 11, 1 (सर्वे सोमयागाः संस्थया सप्तविधाः Comm.). स्तोमपृष्ठ^० 9, 1, 12. इममेवैकाहं पृथक्संस्थाभिरूपेषु 10, 5, 9. KĀTJ. ÇA. 25, 14, 10. ÇĀKH. ÇA. 7, 21, 4. 15, 5, 17. ऽविकृत 26, 9, 4. Bei LĀTJ. 5, 5, 22. fgg. werden neben den sieben Formen des Soma-Opfers (s. oben) noch die sieben Formen des Havirjagña aufgezählt: Agnjādheja, Agnihotra, Darçapūrṇamāsau, die Kāturmāsja, Paçubandha, Sautrāmaṇi und Pākajagña; GAUTAMA hat Agrājaṇeshṭi (an ſter Stelle) st. Pākajagña, die bei ihm gleichfalls in sieben Formen zerfallen: Aṣṭakā, Pārvaṇa, Çrāddha, Çrāvaṇi, Āgrahājani, Kaitri und Āçvajuḡi. — LĀTJ. 10, 20, 10. ÇĀKH. GRH. 1, 1. KAUC. 138. ऽविमदाः BHĀG. P. 3, 13, 37. सुषाव च बहून्सोमान्सोमसंस्थास्ततान् च MBH. 1, 4695. सोमसंस्थासु सप्तसु 12, 930. सोमसंस्था क्विःसंस्थाः पाक्संस्थाश्च सप्त याः MĀRK. P. 23, 38. Verz. d. Oxf. H. 266, b, 36. fgg. पशु^० so v. a. *das Schlachten des Opfertiers* BHĀG. P. 10, 23, 8. प्रेत^० so v. a. *die Cerimonie der Verbrennung des Leichnams* 7, 14, 26. ohne प्रेत dass.: कृत्वा संस्थाविधिं पितुः 10, 66, 27. यामाहुर्लौकिकी संस्था कृतानां समकारयत् 44, 49. ये (पितरः) भुञ्जते विप्रशरीरसंस्थाः wohl so v. a. आह MĀRK. P. 96, 32. संस्था = क्रतु TRIK. = क्रतुभेद H. an. — h) *ein Späher —, Kundschafter im eigenen Lande* (vgl. 2) H. an. (WILSON und ÇKDR. fassen चरे च निजराष्ट्रके als